Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

Original Article

परम्परा एवं आधुनिकीकरण में परिवर्तन के आधार का अध्ययन

डॉ. ओम प्रकाश सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, एम. एल.के. पी. जी. कॉलेज बलरामपुर उत्तर प्रदेश

Email: Opsingh13675@gamil.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180726
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 7
Pp. 129-132
July- 2026
Submitted: 16 June. 2026
Revised: 26 June. 2026
Accepted: 11 July. 2026
Published: 31 July. 2026

शोध सारांश:-

भारतीय समाज अति प्राचीन एवं विशाल धर्मों एवं जातियों से मिलकर बना है, यहां की प्रथाएं ,परंपराएं, मूल्यों - विश्वासों, रहन-सहन के तौर तरीके, भोजन एवं वस्त्र में काफी भिन्नता देखने को मिलता है । ग्रामीण एवं नगरी समाजों में काफी भिन्नता है, जहां ग्रामीण समाज में प्राकृतिक माध्यम से अपना आजीविका कमाते हैं, नगरी समाज में कृत्रिम ढंग से अपना आजीविका जीतें हैं, वही भारतीय समाज की प्रकृति जड़ स्थिर नहीं बल्कि परिवर्तनशील रही है, इन परिवर्तन का स्रोत अंतर्जातीय एवं वहिजाति दोनों तरफ से उत्तरदाई रहे हैं, इसका प्रभाव भारत में इस्लाम का प्रवेश भारतीय संस्कृति पर पड़ा। इसलिए भारतीय समाज पर औपनिवेशिक समाज का प्रभाव सर्वाधिक रहा, जो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रारंभ किया है। जो निम्न आधार के प्रभाव देखा जा सकता है, भारतीय समाज का आधुनिकीकरण, इसका उद्भव का निर्धारण, सुधारवादी आंदोलन का उदय आदि से है।

बीज शब्द:- *परंपरा बनाम आधुनिकीकरण, परिवर्तन का स्रोत, आधुनिकता का आधार, संगठनों द्वारा परिवर्तन, सुधारवादी आंदोलन द्वारा*

प्रस्तावना:-

भारतीय समाज विश्व का प्राचीनतम समाजों में से एक है। यहां का सभ्यता एवं संस्कृत उसे समय प्रारंभ हुआ जब विश्व के अधिकांश लोग जंगलों एवं बर्बर अवस्था में थे,यहां पर अनेकों ऋषि- मुनियों के विचारों को एवं चिंतकों ने अपने-अपने अध्ययन चिंतन अनुभव के आधार पर ऐसी संस्कृति और जीवनशैली को विकसित किया, जो आज भी समय के साथ परिवर्तन के दौर गुजर रहे हैं। भारतीय सामाजिक सुधारो द्वारा जो दार्शनिकों के आधार पर एवं संगठनों के आधार पर देखने को मिलता है।धर्म से सम्बन्धित प्रकार्यात्मक और साथ के प्रकार्य एवं दुश्य कार्य ,कर्म के प्रकार्यात्मक एवं दुश्य कार्य के साथ वर्णव्यवस्था के साथ ,आश्रम व्यवस्था के साथ,जाति व्यवस्था, विवाह, संयुक्त परिवार, एवं नातेदारी आदि भारतीय समाज में निरंतरता एवं परिवर्तन होते गये , इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म का प्रभाव एवं हिंदू सामाजिक संगठनों एवं सुधारवादी आंदोलन द्वारा देखने को मिलता है, इन सब संगठनों द्वारा धीरे-धीरे परिवर्तन होते गए, जो परंपरा बनाम आधुनिकीकरण का स्वरूप प्रदान हुआ।

भारतीय परंपरागत समाज का आधार:-

किसी भी सामाजिक व्यवस्था का अस्तित्व के लिए उसके सदस्यों के लक्ष्य एवं कर्तव्य का निर्धारण किया जाता है, व्यक्ति की लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उचित प्रेरणा प्रदान की जाती है ,जबकि व्यक्ति के कार्य करने की शैली धीरे-धीरे समाज में अपने-अपने कर्तव्यों के द्वारा परिवर्तन होते जा रहे हैं। कर्तव्य केवल भौतिक क्रिया नहीं बल्कि इसके अंतर्गत मानसिक, आध्यात्मिक एवं भावात्मक सभी क्रिया आते हैं कर्म का कोई भी फल जब प्राप्त नहीं होता है. "जैसा कर्म वैसा फल प्राप्त होता है" जो भारतीय समाज का परंपरागत समाज पूर्वजों द्वारा बनाए गए, रीति- रिवाज, विश्वासों व कार्य करने की तौर- तरीके हमें विरासत से प्राप्त होती थी।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. ओम प्रकाश सिंह असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, एम.एल.के. पी.जी. कॉलेज बलरामपुर उत्तर प्रदेश

How to cite this article:
सिंह, ओम. प्रकाश. (2026). परम्परा एवं आधुनिकीकरण में परिवर्तन के आधार का अध्ययन. Journal of Research and Development, 18(7), 129–132. https://doi.org/10.5281/zenodo.21943371

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.21943371
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

जो समाज के मूल्य एवं व्यवहार द्वारा प्राप्त होता है. यह प्रक्रिया दीर्घकाल से चला आ रहा है, भारतीय समाज में जाति व्यवस्था, विवाह ,संयुक्त परिवार, नातेदारी जो परंपरागत समाज का आधार था। जिन्होंने समाज में समन्वय कार्य प्रवृत्तियों के विकास में योगदान देते हुए, सभी समाज की एक इकाई के रूप में प्रकार्यात्मक संबंधों के आधार पर परिवर्तन का स्वरूप हुआ।

डॉ. योगेंद्र सिंह का कहना है कि- "परंपरागत हिन्दू सामाजिक संगठनों की तत्वों को समाज के लिए प्रकायकारी मानते हुए इनमें परिवर्तन एवं प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाता है, और निष्कर्ष दिया कि आधुनिकीकरण की वर्तमान प्रक्रियाओं में निश्चित तौर पर परंपरागत आधारों को परिवर्तित किया है"।

शिव विहाल सिंह ने भी माना है कि-"हिंदू सामाजिक संगठन के परम्परागत आधार तत्वों को प्रासंगिकता को स्वीकार किया है, और निष्कर्ष दिया है कि परिवर्तन स्वरूप के साथ यह आज भी विद्यमान है और चेतन या अवचेतन रूप में व्यक्ति की क्रियाओं को निर्देशित करते हैं"

भारती परंपरा का आधुनिकीकरण:-

भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तनों औपनिवेशिक शासन काल का सर्वाधिक परिवर्तन रहा है, जो भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रारंभ किया इनमें भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण की कारण इन सभी बातों का वोध होता है कि जिसका उद्धव स्मृतियां, ऋषि- मुनियों, पौराणिक नायको द्वारा प्राप्त ज्ञान से होता है। पूर्वजों द्वारा बनाए गए रीति- रिवाज, परंपरा, विश्वासों एवं कर्मकांड और जीवन की तौर -तरीके को हमें जो विरासत से प्राप्त हुआ है,विश्वासो एवं व्यवहारों की एक पूंजी होती थी, जो पीढ़ी -दर - पीढ़ी हस्तांतरित होने के कारण समाज में स्थान एवं समय के अनुसार बदलाव के कारण पुरानी परंपराएं धीरे-धीरे समाप्त होती गई. यह बदलाव सामाजिक, सांस्कृतिक, रीति-रिवाज, परंपराएं , प्रथाएं, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी विश्लेषण के आधार पर भारतीय परंपरा पर विचार किया जाए। आधुनिक शब्द अंग्रेजी शब्द,'Modern' का हिंदी अनुवाद है जिसका अर्थ प्रचलन या फैशन से लिया जाता है, अर्थात जो भी समकालीन है या जिसे वर्तमान समय में प्रचलन है ,वही आज यही आधुनिक हैं। यहीं आधुनिक जब बृहद संदर्भ में बुद्धिमान एवं उपयोगितावाद के दर्शन पर आधारित सोचने समझने और व्यवहार करने के तौर- तरीके को आधुनिकता कहा जाता है ।जब आधुनिकता अपने समकालीन एवं विशिष्ट संदर्भ में परानुभूति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सार्वभौमिकता व्यक्तिवादीता आदि लक्षणों की अनुभव सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक आदि सभी पक्षों में होने वाले परिवर्तन की प्रक्रिया को आधुनिकीकरण कहा जाता है।

ए.आर.देसाई- "आधुनिकीकरण किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं होती है, बल्कि इस प्रक्रिया को सामाजिक ,आर्थिक ,राजनीतिक सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है"।

1. जो निम्न रूप में इस प्रकार है -
2. सामाजिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की गतिशीलता में वृद्धि हुई, जहां प्रदत्त प्रस्थिति के स्थान पर अर्जित प्रस्थिति के महत्व में वृद्धि हुई अर्थात पुरानी परंपराओं को त्याग कर नए व्यवहारों को अपनाने की प्रवृत्ति में संरचनात्मक विश्लेषण में वृद्धि हुई।
3. राजनीतिक क्षेत्र में सत्ता परिवर्तन सार्वभौमिक वैधता की प्राप्ति है जो राजनीतिक शक्ति, कानून, प्रशासनिक संस्थाओं का विस्तार एवं प्रसार द्वारा प्रक्रिया को द्वारा जनता की भलाई के लिए नीति- निर्माण के रूप में दृष्टिगत होती है.
4. आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन विवरण, आवागमन, संचार, प्रौद्योगिकी के लिए पशु एवं मानवीय शक्ति के स्थान पर अमानवीय शक्ति का प्रयोग मशीनीकृत, तकनीकी, औजार का अधिक से अधिक प्रयोग से उच्च तकनीक के परिणाम स्वरूप उद्योग, व्यापार, व्यवसाय, आदि में वृद्धि के साथ-साथ औद्योगीकरण एवं नगरीकरण जैसे आर्थिक कार्यों में उत्पादन एवं उपयोग में वृद्धि के रूप में क्रियाशील है।

परंपरा बनाम आधुनिकीकरण का प्रारंभ:-

भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना 17वीं शताब्दी में भारतीय समाज का संपर्क से आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के साथ संभव हुआ, अंग्रेजों द्वारा भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना और उन्हें बनाए रखने के लिए अपने तकनीक एवं संरचनाओं के माध्यम से आधुनिकीकरण का प्रवेश तो संभव हुआ।इन्होंने मशीनी तकनीकी के माध्यम से औद्योगीकरण की नींव रखी और व्यापार संबंधी आवश्यकताएं, यातायात एवं संचार जैसे साधनों का विकास किया गया, जिससे नगरीकरण की प्रक्रिया को प्रारंभ हुआ ,आर्थिक क्षेत्र में तो विकास हुआ लेकिन संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक के कारण विभेदीकरण के कारण स्तरीकरण से नए-नए वर्गों का उदय हुआ,प्रवास की दर अर्जित प्रस्थिति का महत्व प्राप्त हुआ , व्यक्तिवाद का तो विकास हुआ, लेकिन परंपरागत संरचनाओं में आधुनिकीकरण की कारण के दिशा में परिवर्तन प्रारंभ हो गया।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

जैसे-जैसे पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति का समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, व्यक्तिवादिता, विवेकशीलता के साथ शिक्षा व्यवस्था, धर्मनिरपेक्षता, तार्किक एवं वैज्ञानिक योग्यताओं के कारण पुरानी परंपराएं धीरे-धीरे समाप्त होने लगी, प्रदत्त प्रस्थिति के स्थान पर अर्जित प्रस्थिति के साथ जीवन के सभी पक्षों में परिवर्तन की दिशा को प्रभावित किया। जिससे धर्म का महत्व कम होने लगे निम्न जाति समूह की प्रस्थित में सुधार हुआ । सामुहिकता की जगह पर व्यक्तिवादीता का उदय हुआ ,यहां भारतीय परंपराओं में नातेदारी, विवाह, परिवार एवं संयुक्त परिवारों में भी नवीन परिवर्तनों के साथ एवं समूहों के बीच प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष का वीजा- रोपण प्रारंभ हुआ।

डॉ. योगेंद्र सिंह के अनुसार-" नवीन औपनिवेशिक में नवीन शिक्षा व्यवस्था के साथ मुंबई ,कोलकाता एवं मद्रास विश्वविद्यालय के साथ भारत के तीन क्षेत्रों में परिवर्तन संभव बनाया जो निम्न बिंदु है।

1. नवीन शिक्षा व्यवस्था से मध्यम वर्ग का उदय हुआ, जो विवेकशीलता के सिद्धांत पर आधुनिकीकरण का नेतृत्व प्रदान किया गया।
2. संस्कृति सुधारवादी जैसे ब्रह्म समाज ,आर्य समाज ,प्रार्थना समाज , आदि के माध्यम से परंपरागत कुरिर्तियां एवं बुराइयों को धीरे-धीरे समाप्त होने लगी और नवीनता की ओर विकसित हुआ।

कैसे भारतीय समाज की परंपराएं सामाजिक व्यवस्था की अस्तित्व के लिए अपरिहार्य है, उनके लक्ष्यो एवं कर्तव्यों का निर्धारण से कुछ नैतिक एवं सामाजिक संगठनों द्वारा नवीन सामाजिक व्यवस्था में बदलने पर अहम भूमिका रही है, धर्म को हिंदू सामाजिक संगठन का केंद्रीय आधार माना गया। धर्म के चारों वर्णों , चारों आश्रम व्यवस्था ,चारों पुरुषार्थ के संबंध में मनुष्य का महत्व एवं कर्तव्य से सामाजिक जीवन के संपूर्ण पक्षों को धर्म से संबंध कर व्यक्ति को समाज के लक्ष्य की प्राप्त हेतु निर्देशित किया गया है । भारतीय मान्यताओं एवं परंपराओं के द्वारा धर्म एवं कर्म से ही परमसत्य की ओर बढ़ रहा है ,उत्सव, पर्व ,त्यौहार ,का भी प्रभाव देखने को मिल रहा है, जहां नवरात्र, दशहरा, नाग पंचमी, गणेश चतुर्थी ,जन्माष्टमी, तीज ,करवा चौथ जैसे महत्वपूर्ण व्रत था लेकिन भारतीय परंपरा में आधुनिकीकरण के कारण नवीन समाज में बदलते स्वरूप देखने को मिल रहा है ,व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, भौतिक सुधार के लिए अनुष्ठानों को संस्कार कहा जाता था ।लेकिन व्यक्ति के जीवन शैली में परिवर्तन देखने को मिल रहा है, व्यक्ति के पारिवारिक जीवन जीने के लिए विवाह ,परिवार, नातेदारी और संयुक्त परिवार में जहां पुरानी परंपरा का श्रेय था अब परिवर्तन की दौड़ में बदलाव देखने को मिल रहा है, इस प्रकार से देखा जाए तो व्यक्ति की संपूर्ण गतिविधियों में जैसे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, तकनीकी आज क्षेत्र में पुरानी परंपरा को धीरे-धीरे समाप्त होती नजर आ रही है ,वहीं इन सब के कारण नवीन आधुनिक परंपरा का उदय हुआ।

निष्कर्ष:-

स्पष्ट है कि भारतीय समाज के कुछ ऐसे परंपरागत आधार रह चुके समाज में समन्वयकारी प्रवितियों के विकास में योगदान हो रहे हैं।व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को भी प्रभावित कर रहे हैं इस प्रकार से हिंदू समाज में व्यक्ति की उत्पत्ति के साथ-साथ समाज के विकास में भी सहायक हो रही है, वर्तमान भारतीय समाज निरंतर गतिशील रहा है जो परंपरा एवं आधुनिकता के सह अस्तित्व को परिलक्षित करता है। विद्वानों ने देखा कि भारतीय परंपराएं कभी भी स्थिर नहीं रही बल्कि निरंतर परिवर्तनशील रही है, किसी स्थान पर दी गई समय में जो परिवर्तन होता है उसे हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं। अर्थात प्रत्यक्ष संबंधों में होने वाले परिवर्तन के कारण परंपराओं एवं आधुनिकता में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है, इस प्रकार परंपरा के परिवर्तन के लिए आंतरिक एवं बाह्य दोनों तरह के स्रोत उत्तरदाई रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से जातियों की स्थिति को उंचा उठाने के लिए संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण के रूप में परंपराओं में होने वाले परिवर्तन की स्थिति को दर्शाती है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि भारतीय परंपराएं एवं आधुनिक परंपराओं में भारतीय समाज की जीवन शैली ,जीवन पद्धति , आधुनिकरण की तरफ बढ़ रहा है यही कारण है कि भारतीय समाज की पुरानी परंपरा समाप्त हो रही है, उसके स्थान पर नवीन परंपराओं का उदय हुआ है ।

योगेंद्र सिंह ने कहा है कि-19वीं सदी में होने वाले पुनर्जागरण को भी परंपरा में भी परिवर्तन को क्रियाशील अंतरजात परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में दर्शाती है। भारतीय परंपराओं में परिवर्तन हेतु बाह्य स्रोत को स्वीकार करते हैं यही बाह्य परंपरा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रारंभ किया ।भारतीय परंपरा में ऐतिहासिक रूप से क्रियाशील परिवर्तन एवं निरंतर के कारण आधुनिकीकरण के रूप में बदलाव देखा गया, इस प्रकार से औपनिवेशित भारत में प्रारंभ में आधुनिकीकारण की प्रक्रिया और भारतीय परंपरा में एक और अटुट क्रम विद्यमान रहा है कुछ विरोधों एवं अंत विरोधों के कारण एक दूसरे हो संपोषित किया है इस प्रकार से परंपरा का आधुनिकीकरण हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. पांडेय ,यस यस- समाजशास्त्र के संग्रह, टाटा मैगोव होल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली।
2. जनजाति स्रोत प्रशिक्षण केंद्र- नदीम हुसैन, गोमती नगर, लखनऊ उत्तर प्रदेश।
3. सिंह, वी.एन. नगरीय समाजशास्त्र- रावत पब्लिकेशन, जयपुर- नई दिल्ली।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

4. कुरुक्षेत्र- ग्रामीण विकास में मंगलाए नई दिल्ली से।
5. कॉस्ट इन इंडिया पॉलिटिक्स- रजनी कोठारी।
6. इन क्वालिटी आफ सोशल चेंज - आंद्रे वेते।
7. राम कृष्ण मुखर्जी- ग्रामीण समाज की गत्यात्मकता।
8. टारगेट प्वाइंट- ए.के. तिवारी इलाहाबाद (प्रयागराज)
9. सिंह रामधारी- भारतीय कला और पर्यावरण चेतना, वाराणसी भारतीय प्रकाशन।
10. शर्मा, एच.डी.- भारतीय संस्कृति और पर्यावरण दिल्ली -हिंदी ग्रंथ अकादमी।